गुरुवाणी

जो शिक्षक है उनसे मैं आशा करता हूँ कि वो (बच्चों को) ऐसी शिक्षा प्रदान करें जो बच्चों को मनुष्य बनावें।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No-G-2/VSI (E)-04/2016-18

वर्ष-१६, अंक २ | **शनिवार ३० जनवरी २०१६ ई०** | **सहयोग राशि ४.२५**

प्रकृति

प्रकृति यानी वह वातावरण जिससे चारों तरफ से प्राणी घिरा हुआ है। जिसमें प्रकृति के तीन अवयव नभ, जल, थल समाहित हैं। जिसे पर्यावरण की भी संज्ञा दी जा सकती है। मानव समेत समस्त प्राणियों के शरीर का निर्माण प्रकृति द्वारा ही किया जाता है। जिसे तुलसीदास जी के शब्दों में "क्षिति, जल, पावक, गगन। समीरा, पंचरचित यह अधम शरीरा।।" यानी इसी पर्यावरण में जन्म लेकर प्राणी भोजन पाता है। बढ़ता है एवं अन्तत: इसी में विलीन भी हो जाता है। अनन्त काल से प्रकृति की अनन्त महिमा गायी गई है। विशेषकर मानव के लिये उसके जीवन काल तक प्रकृति सदैव असरकारी रहती है। प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति अर्थात् उसका स्वभाव यह दर्शाता है कि वह किस ग्रह, नक्षत्र, पारिवारिक परिवेश में जन्म लिया, पला एवं बढ़ा है। किसी व्यक्ति विशेष को जब हम इंगित करते हुए कहते हैं कि अमुक व्यक्ति शान्त प्रकृति का, गम्भीर प्रकृति का व्यक्ति है वह उच्चशृंखल, उथला अथवा छिछोरा प्रकृति का नहीं है तो उसके जन्म से लेकर पालन पोषण तक के सारे लक्षण स्वयमेव प्रकट हो जाते है जिसे व्यक्ति छिपा नहीं सकता। कहा भी गया है कि व्यक्ति का नेचर एवं सिग्नेचर जल्दी नहीं बदलता है। फलत: जो प्रकृति प्रदत्त गुण उसमें समाया रहता है जिसके शनै: शनै: ग्रहण से उसके व्यक्ति का निर्माण होता है उसमें परिवर्तन करना या होना एक दुष्कर कार्य है। ध्यातव्य है कि बाल सुलभ मन मस्तिष्क कोरा कागज या कच्चे मिट्टी की तरह होता है। उसका पालनहार या वातावरण घर, परिवार नामक कुम्हार उसे जैसे आकार दें, रूपान्तरित करें वह आसानी से वैसा आकार ग्रहण कर लेता है एवं जीवन भर उसका असर बना रहता है। यद्यपि एक ही माता पिता के परिवेश में पले पढ़े सन्तानों के स्वभाव में काफी अन्तर देखा गया है। उनकी भी स्थिति एक सी नहीं रहती। फर्ज कीजिये दो बेटों ने अपने शराबी पिता की जीवन स्थिति को बचपन से देखा है। हो सकता है कि एक पिता के रास्ते जाय परन्तु दूसरा उस असामान्य स्थिति से सतत सावधान होकर उससे पृथक बना रहें। अत: प्रकृति के नियमों का अध्ययन, अनुशीलन, खोज एवं अन्वेषण की विषय-वस्तु है।

वर्तमान समय में पर्यावरण एवं प्रदूषण की समस्या विश्व स्तर पर भयावह होती जा रही है। असमय बाढ़, वर्षा, सुनामी आदि का प्रभाव वर्तमान समय में संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा आदि राष्ट्रों में बर्फ की आँधी से प्रकृति का कोप स्वयंसिद्ध है। कुछ वर्ष पहले उत्तराखण्ड में आया भयानक जल विप्लव प्रकृति की कोप को सिद्ध करने के लिये काफी है। यह सब हमारे विकासवादी प्रकृति के प्रति गलत अवधारणा, दुरुपयोग, स्वार्थ में होकर कार्य करने के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ। मनुष्य का साथी पेड़, पौधे, वन, पहाड़, नदियाँ सभी प्राकृतिक गुणों से भरपूर है परन्तु अनावश्यक दोहन का प्रभाव हम आये दिन देख रहे हैं। भारत की राजधानी नई दिल्ली तक में परिवहन में सम विषम संख्या का नियम लागू किया जाना प्रकृति के साथ छेड़छाड़ को ही दर्शाता है। प्राणियों को प्राणवायु जो हवा के रूप में अनायास ही हमें प्राप्त हो रही है। उसके संतुलित संघटन में परिवर्तन का ही नाम प्रदूषण है। स्वच्छ हवा, स्वच्छ जल, जीवन धारण करने के लिये अत्यन्त आवश्यक कारक है। हम जानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य प्रतिदिन लगभग २२००० बार सांस लेते हैं। जिससे लगभग ३५ गैलेन हवा का का उपयोग प्रति मानव द्वारा किया जाता है। जिससे इस प्राकृतिक सम्पदा का महत्व प्रदर्शित होता है। विडम्बना यह है कि हमारा यह भारत राष्ट्र जहाँ पर पूर्व में ऋषि, मुनियों, महर्षियों द्वारा पहाड़ों, नदियों, पेड़-पौधे, सूर्य, चन्द्र के साथ दसों दिशाओं को पवित्र मानकर चिह्नित किया गया है। जिससे हमारे पूर्वजों द्वारा बताये गये प्रकृति के प्रभाव की विलक्षणता को सहज ही समझा जा सकता है। जहाँ हवन से वातावरण एवं वायुमण्डल को शुद्ध स्वच्छ रखे जाने की परम्परा रही है। आज हमारा ही राष्ट्र भारत प्रदूषण के स्तर पर विश्व में सातवें पायदान पर खड़ा है और दिन-ब-दिन स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। आजकल प्रदूषण की चिन्ता समस्त भारतवासियों को सता रही है क्योंकि यही स्थिति जारी रही तो आने वाले वर्षों में वातावरण पूर्णत: विषाक्त हो जायेगा। जिससे पृथ्वी के तापक्रम में बढ़ोत्तरी होगी। पादप जगत पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ विनष्ट होती चली जायेगी। ग्लेशियरों के पिघलने से असमय प्रलय की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा यह बयान जारी किया गया है कि विश्व में प्रतिवर्ष आठ करोड़ की आबादी प्रदूषण के कारण ही विनष्ट हो रही है तथा भारत में भी प्रदूषण मृत्यु एवं बीमारी का एक प्रभावकारी कारक बन रहा है। हमारे शरीर के मुख्य अंग दिमाग, हृदय, फेफड़े, जिगर, किडनी आदि की बीमारियाँ प्रदूषित भोजन, प्रदूषित जल एवं प्रदूषित वातावरण के ही कारण बढ़ती जा रही है। वर्षा ऋतु में समय से नक्षत्रों के अनुसार वर्षा का न होना, शीतकाल में स्वभावत: जाड़ा का न पड़ना अथवा ग्रीष्म ऋतु में प्रकृति का तापमान अनावश्यक रूप से बढ़ जाना मृत्यु का कारक बनता जा रहा है। इसीलिए हमारे ऋषि, मुनियों ने अन्तरिक्ष, पृथ्वी, पेड़-पौधे के साथ समस्त वातावरण की शुद्धि एवं शान्ति की कामना किया है। अन्यथा विगत वर्षों में आणविक एवं तकनीकि रूप से विकसित देश जापान, की फुकुशिमा, टोकिया-जापान की वह घटना समस्त मानव जाति के लिये सावधान करने के लिये काफी है। जहाँ सुनामी भूकम्प के बाद तबाह हुए परमाणु रिएक्टर द्वारा आज तक कहर बरपाया जा रहा है।

प्रकृति एवं मानव के अन्योनाश्रय सम्बन्ध को दृष्टिगत रखते हुए परमपूज्य भगवान् अवधूत राम जी के द्वारा प्रतिपादित अघोर वचन शास्त्र प्रकृति को एक अध्याय के रूप में जोड़ा गया है। जिसमें प्रकृति के साथ मानव का गूढ़ सम्बन्ध बताया गया है। प्रात:काल से रात्रि काल तक मनुष्य के द्वारा किये गये कर्म को प्रकृति के ही गोद में बैठकर किया जाने वाला बताया गया है। समय भी प्रकृति के ही अन्तर्गत आच्छादित है। प्रकृति के साथ परा-प्रकृति का भी प्रभाव पड़ता है जो सदैव परिवर्तनशील है। जगत मंगल हेतु शक्ति की पूजा तथा अन्तत: आदिशक्ति सर्वेश्वरी में विलय का समस्त कार्यक्रम प्रकृति का ही रूप कहलाता है। माँ सर्वेश्वरी, काली, दुर्गा, चण्डी, मातृ देवालयों तक सीमित नहीं है। बल्कि पूरे प्रकृति में सर्वव्यापी है। प्रकृति पुरुष की पूरक होती है। प्रकृति अभ्यन्तर के अपार रहस्यों का उद्घाटन करने वाली होती है।

शेष पृष्ठ दो पर

आत्मविश्वास

स्वयं पर विश्वास को ही आत्मविश्वास कहते हैं। यह गुण जिस सौभाग्यशाली व्यक्ति के अन्दर आ जाता है वह विपरीत परिस्थितियों में अपने लिये सफलता का मार्ग निकाल लेता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति नकारात्मक विचार धारण करता है। पग-पग पर अविश्वास व विफलता उसका पीछा नहीं छोड़ता। वो कत्तई सफल नहीं हो सकते। आत्मविश्वासी का पांव मार्ग कण्टकाकीर्ण होने पर भी कत्तई रूकता नहीं है। बल्कि वह अपना रास्ता स्वयं विर्निमत कर लेता है। आत्मविश्वास की जननी प्रबल चाह में छिपी रहती है। यदि व्यक्ति अपने पर अटूट विश्वास कर लें जो सोंचे उसे साकार करने के लिये जुझारूपन का भाव ले आवें तो कोई शक्ति नहीं है जो उसे उसके मार्ग से विरत करें। समाज में बहुतेरे ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें दुनिया की फिकर ज्यादा रहती है वे इस आशंका से घिरे रहते हैं एवं अपने को कमजोर महसूस करते हैं कि असफल हो जाने पर उन्हें समाज क्या कहेगा? जबकि सत्य आचरण का स्वामी अपने सोच को कर्त्तव्य में बदल कर ही सांस लेता है।

हमारे भारतभूमि समेत समस्त विश्व ऐसे उदाहरणों से पटा पड़ा है जिसमें जुझारू आत्मविश्वासी व्यक्तियों ने असम्भव को सम्भव कर दिखाया है। बिहार के गया जिले के दशरथ मांझी का उदाहरण एक कमजोर तबके आर्थिक रूप से तंगहाल व्यक्ति की है जो कि अपने कालजयी कर्त्तव्य के बल पर दुनिया का 'माउण्टमैन' जैसे उपाधि से नवाजा गया। समाज के लोग श्री मांझी का उपहास करते थे जबकि अकेले दम पर २२ साल तक वे लगातार कार्य करते रहे एवं २७ फीट ऊँचे पहाड़ को काटकर समतल चौड़ा रास्ता तैयार कर दिये। जिससे ८० किलोमीटर की लम्बी दूरी ३ किलोमीटर में ही सिमट कर रह गयी। श्री मांझी को भी अपने कार्य की सराहना का कोई लालच नहीं था। न तो उन्हें यह अंदाज था कि यह कार्य कितने अवधि में पूरा होगा। परन्तु अपने प्रचंड आत्मविश्वास, समर्पण लगातार पुरुषार्थ सकारात्मक सोच के साथ वे भगीरथ प्रयत्न करके आज समाज के मध्य उदाहरण स्वरूप सिद्ध हुए हैं।

हम सभी के जीवन में कठिन परिस्थितियाँ आती रहती है जो भीषण प्रबलतम समुद्र की लहरों की भांति दिखाई देती है। जो व्यक्ति उनकी भयावहता को देखकर हार मान लेता है। उसके आगे समर्पण कर देता है, सिर झुका लेता है वह निश्चित ही हार जाता है। जबकि समझदारी, बहादुरी, आत्मविश्वास के साथ डटकर सामना करने से बादलों की भांति सारे धुंध छंट जाते हैं। आत्मविश्वास का न होना वास्तव में एक कमजोरी है जो व्यक्ति के अन्दर छिपे शत्रु की भांति प्रभावी हो जाता है, यदि हम इसे तलाश कर निकाल कर इस पर प्रतिघात करें अपने नैसर्गिक प्रतिभा व आत्मविश्वास से इसका भेदन करें, तो कोई कारण नहीं कि हम हारे हुए इंसान की श्रेणी में गिने जाये। हमारा खराब स्वास्थ्य बुरी आदतें, खानपान में चटोरापन ही हमें कमजोर करता है। परन्तु इस पर काबू करके अपने हीनता के डर को दूर कर यदि हम अदम्य इच्छा व आत्मविश्वास से लबरेज होकर कार्य करें तो अघोरेश्वर का प्रकाश हमें सदा मिलता रहेगा एवं हम अपने मनोवांछित लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रकृति

हमारी पूजा उपासना प्रकृति में व्याप्त उस अपार शक्ति की होती है। जिससे हमारा सर्वकल्याण सुनिश्चित है। प्रकृति का गुण सजा न्याय करना होता है। जो जैसा करता है, उसके प्रकृति के अनुसार अंजाम या परिणाम अच्छा या बुरा उसे प्राप्त होता है। सुबह शाम प्राणी के जीवन में एक-एक क्षण का बीतना प्रकृति की ही लीला है। नाना प्रकार के वैज्ञानिक खोजों से लेकर मानव के विकास तक का रहस्य प्रकृति के गोद में छिपा है। ईश्वर के प्रति विश्वास या अविश्वास नमस्कार या तिरस्कार समस्त गुण अवगुण प्रकृति द्वारा ही रचा जाता है। प्रकृति के अन्तर्गत वृक्ष लतायें विभिन्न वर्ण, रूप, रंग, आकृति, स्थिति-परिस्थिति, जंत्र-मंत्र समस्त क्रिया-कलाप से हम प्रतिदिन दो चार होते हैं। भाव, अभाव प्रकृति की ही देन है। सृष्टि के आरम्भ से जबसे हमारी आत्मा उदय हुई, संस्कार पड़ा उसी समय से अज्ञानतावश बुरे संस्कारों में भी हम जकड़े हैं। इसीलिये ॐ हरिः, ॐ तत्सत् नमो दिव्याम्, भैरवाम्, अक्षोभ्य, अघोरेश्वराय, आकाश, शान्तिः, पृथ्वी शान्तिः, चारों दिशाओं शान्ति कहकर पूजार्थी उच्च गति को प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। मनुष्य का बाल, दाढ़ी, नाखून का प्रतिदिन बढ़ना प्रकृति के सतत परिवर्तन का संकेत है। इसीलिए प्रकृति के नियम को मानने वाले सदा सुखी रहते हैं।

प्राकृतिक नियम की अवहेलना ही दुःख एवं बीमारी का कारण है। प्राकृतिक चिकित्सा में कोई दवा अथवा इंजेक्शन आदि का व्यवहार नहीं होता बल्कि मानव को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करा दिया जाता है। दिवाकर की किरणें, मिट्टी, जल, पृथ्वी आदि से ही रोगी को सम्पर्क में रखकर प्राकृतिक चिकित्सक उसका इलाज करते हैं। मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुसार ही जिज्ञासावश गुरु की खोज भी करता है। जिससे उसके सारे अवगुणों को सद्गुरु अवशोषित कर उसे काग से हंस बनाने की क्षमता रखते हैं।

पृथ्वी पर दैव के रूप में अवतरित हुए साधु संत औघड़, अघोरेश्वर प्रकृति के ही प्रतिनिधि होते हैं। जिससे वे अपने सम्पर्क में आये हुए भक्तों, शिष्यों को प्रकृति के साथ व्यवहार मानव से मानव के प्रति सद्भाव, स्वच्छता, सम्पन्नता आदि आदि की शिक्षा देते आयें है इसलिये पूर्व के काल में हमारे नदी, पहाड़, वातावरण स्वस्थ एवं स्वच्छ बने रहे। प्रकृति में उपस्थित पर्यावरणीय सम्पदा पर किसी एक का अधिकार बिल्कुल नहीं है। सूर्य, चन्द्र, नदी, पहाड़, हवा की तरह ही सम्पूर्ण मानव जाति का साझा अधिकार प्रकृत पर होता है। प्राकृतिक धारा के साथ छेड़छाड़ ही आज हमारे पवित्र नदी गंगा को प्रदूषित होने का एकमात्र कारण है।

शेष पृष्ठ तीन पर

आमंत्रण

श्रद्धेय माताओं, बहनों एवं धर्म बन्धुओं!

अघोर गुरुपीठ बाबा कीनाराम स्थल अर्थात् क्रीं कुण्ड के 11वें पीठाधीश्वर बाबा श्री सिद्धार्थ गौतम राम जी का अभिषेक दिवस एवं ब्रह्मलीन पीठाधीश्वर बाबा राजेश्वर राम जी (बुढ़ऊ बाबा) का महानिर्वाण दिवस तथा सेवा संस्थान का स्थापना दिवस **दिनांक 10 फरवरी 2016, बुधवार** को परम्परागत ढंग से इस परम् पुनीत स्थली पर मनाया जायेगा।

इस अविस्मरणीय महोत्सव पर आप सभी अघोर भक्त सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम

1. प्रातःकालीन आरती के उपरान्त श्रमदान एवं सफाई कार्यक्रम तथा प्रभातफेरी।
2. प्रातः 8 बजे से पूज्य पीठाधीश्वर जी द्वारा समस्त समाधियों का पूजन एवं दर्शन।
3. पूर्वाह्न 9.30 बजे से श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य पीठाधीश्वर जी का दर्शन-पूजन।
4. दोपहर में प्रसाद वितरण।
5. सायंकाल 4 बजे से गोष्ठी एवं पूज्य पीठाधीश्वर जी का आशीर्वचन।
6. सायंकालीन आरती 7.30 बजे से प्रारम्भ।
7. रात्रि 8 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम।

दूसरे पृष्ठ का शेष

जिसके लिये भारत सरकार को अलग से मंत्रालय की स्थापना तक करनी पड़ी। आज भी नदियों के किनारे लगने वाले कुम्भ मेला में नदियों की अक्षुणता एवं पवित्रता पर ही मेला की सफलता निर्भर है। नदी की शुद्धता पर नियंत्रण रखने के लिये भारत में चार स्थानों पर छः वर्ष पर अर्धकुम्भ एवं बारह वर्ष पर कुम्भ के आयोजन की परम्परा बनती चली आयी है। जहाँ पर गुरु के द्वारा अपने विश्वासी, आस्थावान शिष्यों एवं परिवार को हर प्रकार से प्रकृति से लेकर मानव तक से व्यवहार करने की सीख दी जाती है। आज

प्रकृति

प्रकृति हमारे लिये चुनौती बनी हुई है। यही हमारे संतुलित, सहज एवं स्वस्थ जीवन की आधारशिला है। स्वच्छ एवं पवित्र वातावरण में भरपूर सांस लेने वाला व्यक्ति प्राकृतिक रूप से आत्म सम्मान, प्रसन्नता, शान्ति, उमंग एवं स्वास्थ्य लाभ लिये होता है जबकि इसमें कमी होने पर प्रकृति के गोद में बैठे मानव प्राणी जैसा की आज कल देखा भी जा रहा है आत्महीनता, अवसाद, स्वार्थपरता, आतंकी स्वभाव, मनोरोग आदि से पीड़ित हो जाता है।

प्रकृति को अपने अनुरूप ढालने के लिये हमारे अन्दर आध्यात्मिकता की चिंगारी होनी चाहिए। जिससे मनोरोग एवं विकृतियाँ जल कर भस्म होती रहे। फलस्वरूप व्यक्ति विशेष में सकारात्मक सोच, एक दूसरे के साथ परस्पर हार्दिक मेल-मिलाप, शालीनता, विनयशीलता, अन्याय न सहने वाला, दया, करुणा आदि सत्वगुण स्वमेव घर करने लगते हैं। जिससे जीवन में आशातीत शान्ति, सफलता मैत्री भावना, सहानुभूति इत्यादि सद्गुणों से ओतप्रोत होकर हम पूरे जीवन को वरदान की तरह व्यतीत करते हैं। आपसी वैरभाव, कलह का नितान्त क्षय होता रहता है। यदि हम और आप प्रकृति के नियमों की अनदेखी न करें तो हममें ऐसी सद्प्रेरणा अपने आप मिलती चली जायेगी। जिससे जीवन के हर क्षेत्र में हमारी भावना विनीत, संस्कारी बनी रहेगी और हम ऐसा कर्म करेंगे जिसका परिणाम अच्छा ही होगा।

आदिगुरु दत्तात्रेय के द्वारा प्रकृति के ही चौबीस जीवों को अपना गुरु बनाया गया है। वे उनके एक-एक सद्गुणों को ग्रहण करके समाज में मानव को शक्तिशाली बनाने हेतु उनके गुणों को ग्रहण करने का उपदेश दिये। सृष्टि में जिसने प्रकृति का अनावश्यक दोहन किया है अथवा चालाकी किया है। उसका प्रतिफल कुफल के रूप में उसे ही भोगना पड़ा। परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी की वाणी ''स्वच्छ तथा निर्मल आकाश में उस पक्षी की भांति विचरण करने लगोगे जो हर देश में, हर प्रान्त में, हर राज्य में, हर इलाके में आकाश में उड़ती है। उसकी कोई सीमा नहीं होती है। उसका कोई मेड़-डांड नहीं होता है। सब उसका है और सब उसके हैं। ऐसे व्यवहार करने वाले ही सर्वेश्वरी परिवार के हुआ करते हैं।''

आप और हम जानते हैं कि जब अपने आप पर विश्वास होता है तो उसे आत्म विश्वास कहते हैं जिससे सब कुछ सुगम हो जाता है। प्रकृति हमारे अनुकूल हो जाती है। हम जैसा चाहते हैं वैसा ही घटित होने लगता है मनुष्य की प्रकृति एवं प्रवृत्ति शान्ति, सुख पाने की रही। अपमानित एवं प्रताड़ित होने से हमें अपार मानसिक कष्ट होता है। शुद्ध जल, स्वच्छ भोजन, नियमितता के अभाव में चिड़चिड़ापन आ जाना स्वाभाविक है जिससे हमें अपार मानसिक कष्ट भी होता है। इस दुःख से छुटकारा हेतु हमारे गुरुओं द्वारा चुप रहने यानी जरूरत भर ही बोलने की छूट दी गयी है। जैसा कि ''अघोर वचन शास्त्र'' में परम पूज्य की वाणी द्वारा उद्धृत किया गया है।

''बन्धुओं! हम कहाँ सुख पाते हैं, कहाँ शान्ति पायेंगे, कहाँ पर मेरा चित्त स्थिर होगा हमार स्वजाति। स्वजाति से मतलब हमारी प्रकृति, जिस प्रकृति को मिलन होगा, वहाँ मुझे सुख होगा, शान्ति होगा, स्थिरता होगा। हमारी उस प्रकृति से उनकी प्रकृति नहीं मिल रहा है तो हम यदि उसके साथ लगे रहेंगे तो हम अपमानित होंगे, प्रताड़ित होंगे और हम मानसिक कष्टों को भी झेलते रहेंगे। दुःखी होंगे। हमारे गुरुओं द्वारा चुप रहने की जो सीख हमें मिली है, यह एक चुप्पी हजारों कलह का नाश करती है। यही तो वह चुपचाप, चूका-मूका बैठकर या थिर बैठकर आदमी उस चैतन्य को निहारता है कि सारी पृथ्वी उसी की है। एक ओद्र है और उस ओद्र में एक गलियारी है जिसमें हमलोग हैं। उसी का यह बगीचा है और अलग-अलग दिखाई देने वाले यह चेहरे वर्ण-वर्ण के पुष्प हैं। इसमें जो कुछ भी अच्छा, जिससे-जिससे जितना लगाव है, वह वहाँ तक उस सुमधुरता को प्राप्त करता है, आनन्द तथा सुख को प्राप्त करता है, शान्ति को प्राप्त करता है।

नवस्थापित अघोर आश्रम-कमरौली, हरदोई

संत अवतरण को स्पष्ट करते हुए कबीर दास जी ने कहा है कि—

वृक्ष कबहुँ नहीं फल भखै, नदी न संचय नीर।
परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर।।

उपरोक्त उक्ति को चरितार्थ करते हुए जन-कल्याण हेतु कृत संकल्पित अघोराचार्य परम पूज्य बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी के द्वारा दिनांक २० जनवरी २०१६ दिन बुधवार को जनपद हरदोई (उ०प्र०) के सदर तहसील अवस्थित ग्राम-कमरौली में ''अघोर आश्रम'' की स्थापना की गई।

पौराणिक मान्यता के अनुसार स्थान हरदोई राजा हिरण्यकश्यपु की राजधानी रही है, जहाँ भक्त के रक्षार्थ भगवान विष्णु को नरसिंह अवतार धारण कर अत्याचार, आतंक का अंत एवं सदाचारी साधुजनों को शान्ति एवं त्राण प्रदान किया गया था।

ध्यातव्य है कि ग्राम-कमरौली, जनपद-हरदोई से १२ किमी हरदोई-कानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे अवस्थित है जिसके एक तरफ नहर आश्रम को मनोहारी दृश्य से आच्छादित करती रहेगी। उक्त दिनांक को विपुल अघोरनिष्ठ भक्तों के मध्य अघोराचार्य परमपूज्य बाबा सिद्धार्थ गौतम रामजी (पीठाधीश्वर क्रीं कुण्ड, वाराणसी) के द्वारा विधिवत् भूमि पूजन एवं शिलान्यास का कार्यक्रम भी सम्पन्न किया गया। मौके पर भूमि लगभग डेढ़ एकड़ यानी ०.५६८६ हेक्टेयर (५६८६ वर्गमीटर) क्षेत्रफल में फैली हुई है तथा लखनऊ के पश्चिम समाज के कल्याण हेतु प्रथम अघोर आश्रम की स्थापना की गई है। आश्रम हेतु भूमिदाता ब्लाक प्रमुख सुरसा, हरदोई अघोर भक्त श्री संजय मिश्र पुत्र स्व० डॉ० हरिशंकर मिश्र निवासी मलिहा-मऊ, तहसील सदर-हरदोई शत्-शत् साधुवाद के पात्र सिद्ध हुए हैं। उक्त अवसर पर मातृ संस्था अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान, वाराणसी के मंत्री श्री उदयभान जी के अतिरिक्त सर्वश्री अजीत जी, दुर्गेश जी, मुन्ना जी एवं कैलाश निषाद उपस्थित रहे। स्थानीय तहसीलदार परम अघोर भक्त श्री प्रभाकर त्रिपाठी जी का अप्रतीम एवं उल्लेखनीय योगदान बना रहा। भूमि की रजिस्ट्री परमपूज्य द्वारा रजिस्ट्री कार्यालय हरदोई स्वयं पधारकर करायी गयी। श्रीचरण को अपने मध्य पाकर सब रजिस्ट्रार श्री छांगुर प्रसाद मौर्य के साथ पूरा रजिस्ट्री स्टाफ हर्षित, कृत-कृत हुआ एवं समस्त उपस्थित स्थानीय श्रद्धालु भक्तों द्वारा अघोर आश्रम के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों नशा, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या आदि के समूल उन्मूलन के साथ जनकल्याण की कामना की गई।

रेनुकूट आश्रम में माँ मैत्रायिणी योगिनी निर्वाण दिवस समारोह

दिनांक 13 जनवरी 2016 को सर्वेश्वरी समूह शाखा रेनुकूट (चाचा लाल बहादुर कालोनी अवस्थित) में उपरोक्त समारोह के अन्तर्गत आदिवासी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के मध्य 350 नई साड़ियाँ एवं बच्चों में नया कपड़ा बाँटा गया। उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शाखा के सचिव सर्वश्री शिव प्रताप सिंह उर्फ बबलू सिंह, लालबहादुर सिंह उपस्थित होकर कार्यक्रम को सम्पादित कराये। शाखा के कार्यकर्ताओं द्वारा भिक्षाटन कर लाया गया पुराना वस्त्र भी जरूरतमंदों के मध्य वितरित किया गया। ग्राम-बेनवादह, पाटी, धौकी नाला मलिन बस्ती, रेनुकूट आदि से विपुल संख्या में महिलाओं एवं बच्चों की उपस्थिति बनी रही।

अन्त में विशाल भंडारा आयोजित किया गया। जिसमें योगदान स्वरूप सर्वश्री पी0के0 सिंह, संतोष सिंह, सतेन्द्र सिंह, मदनमोहन, केशव, राकेश, गोला प्रसाद, शेषनाथ सोनी आदि की भूमिका सराहनीय रहीं।

अघोर गुरुपीठ बाबा कीनाराम स्थल के प्रमुख पर्व

13 जनवरी 2016	बुधवार	माँ मैत्रायिनी योगिनी का निर्वाण दिवस
27 जनवरी 2016	बुधवार	गणेश संकष्ठी गणेश चतुर्थी (8.42 चन्द्रोदय)
07 फरवरी 2016	रविवार	अवधूत भगवान रामजी का अनन्य दिवस (माघ कृष्ण चतुर्दशी)
10 फरवरी 2016	बुधवार	अभिषेक दिवस, निर्वाण दिवस एवं संस्थान का स्थापना दिवस
13 फरवरी 2016	शनिवार	बसन्त पंचमी
07 मार्च 2016	सोमवार	महाशिवरात्रि
22 मार्च 2016	मंगलवार	होलिका दहन रात्रि 10.52 से 12.09 तक
23 मार्च 2016	बुधवार	होली

चैत्र नवरात्र प्रारम्भ

08 अप्रैल 2016	शुक्रवार	प्रथमा	दिन में 2.24 मिनट तक
09 अप्रैल 2016	शनिवार	द्वितीया	11.58 मिनट तक
10 अप्रैल 2016	रविवार	तृतीया	9.38 मिनट
11 अप्रैल 2016	सोमवार	चतुर्थी/पंचमी	प्रातः 7.29 तक/रात्रि 5.35 तक पंचमी
12 अप्रैल 2016	मंगलवार	षष्ठी	देर रात्रि 3.59
13 अप्रैल 2016	बुधवार	सप्तमी	देर रात्रि 2.46 मिनट तक
14 अप्रैल 2016	गुरुवार	अष्टमी	देर रात्रि 1.58 मिनट तक
15 अप्रैल 2016	शुक्रवार	नवमी	देर रात्रि 1.38 मिनट तक
16 अप्रैल 2016	शनिवार	दशमी	देर रात्रि 1.52 मिनट तक

(घट स्थापना 11.50 से 12.23 बजे तक)

(महानिशा पूजन 14.04.2016 गुरुवार रात्रि को मनाया जायेगा।)

01 मई 2016	रविवार	परम पूज्य पीठाधीश्वर बाबा श्री सिद्धार्थ गौतम राम जी का अवतरण दिवस
19 जुलाई 2016	मंगलवार	गुरुपूर्णिमा
21 अगस्त 2016	रविवार	बहुला गणेश चतुर्थी
30 अगस्त 2016	मंगलवार	अघोर चतुर्दशी (महराजश्री का जन्म दिवस (भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी)
07 सितम्बर 2016	बुधवार	लोलार्क षष्ठी महोत्सव (महाराजश्री बाबा कीनाराम जी का षष्ठी पर्व)
08 सितम्बर 2016	गुरुवार	अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान राम जी का अवतरण दिवस (भाद्र शुक्ल पक्ष सप्तमी)
21 सितम्बर 2016	बुधवार	सर्वेश्वरी समूह का स्थापना दिवस

शारदीय नवरात्र प्रारम्भ

01 अक्टूबर 2016	शनिवार	प्रथमा	कलश स्थापना (5.39 देर रात्रि)
02 अक्टूबर 2016	रविवार	द्वितीया	पूर्ण तिथि
03 अक्टूबर 2016	सोमवार	द्वितीया	प्रातः 7.29 मिनट तक
04 अक्टूबर 2016	मंगलवार	तृतीया	प्रातः 9.32 मिनट तक
05 अक्टूबर 2016	बुधवार	चतुर्थी	प्रातः 11.37 मिनट तक
06 अक्टूबर 2016	गुरुवार	पंचमी	मध्याह्न 1.34 मिनट तक
07 अक्टूबर 2016	सोमवार	षष्ठी	मध्याह्न 03.14 मिनट तक
08 अक्टूबर 2016	शनिवार	सप्तमी	सायंकाल 4.30 मिनट तक
09 अक्टूबर 2016	रविवार	अष्टमी	सायंकाल 5.20 मिनट तक
10 अक्टूबर 2016	सोमवार	नवमी	सायंकाल 5.38 मिनट तक

(घट स्थापना - प्रातः 8.14 मिनट से 10.38 तक अभिजीत मुहुर्त 11.22 से 12.10)

08 अक्टूबर 2016 शनिवार, महानिशा (सप्तमी की रात्रि में मनाया जायेगा)

15 अक्टूबर 2016	शनिवार	शरद पूर्णिमा
30 अक्टूबर 2016	रविवार	दीपावली
14 नवम्बर 2016	सोमवार	देव दीपावली (कार्तिक पूर्णिमा)
21 नवम्बर 2016	सोमवार	भैरव अष्टमी
29 नवम्बर 2016	मंगलवार	अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान राम जी का महानिर्वाण दिवस

अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान

बी- ३/३३५, क्रींकुण्ड, रविन्द्रपुरी, वाराणसी (उ०प्र०)